ग्रामीण वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित कैसे करें

भारत डोगरा

हाल के वर्षों में ग्रामीण आविष्कारक मंगल सिंह का नाम काफी चर्चा में रहा है। ललितपुर ज़िले, उत्तर प्रदेश के एक गांव में अपनी खेती-किसानी की समस्याओं से जूझते हुए उन्होंने 'मंगल टरबाइन' बनाया जिसे पेटेंट भी प्राप्त हुआ। मंगल टरबाइन एक विशेष तरह से तैयार किया गया टरबाइन है जिससे किसान नदी-नालों से बहते पानी की ऊर्जा का उपयोग कर सिंचाई के लिए पानी लिफ्ट कर सकते हैं। इस तरह सिंचाई में बिजली व डीज़ल की भारी बचत होगी व लाखों किसानों का खर्च कम हो सकता है। मंगल टरबाइन का थोड़ा-सा विस्तार कर इसका उपयोग कुटीर उद्योग चलाने या बिजली उत्पादन के लिए भी हो सकता है। गांववासियों के लिए बहुमुखी उपयोगिता के अलावा मंगल टरबाइन से ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन कम करने में भी मदद मिलेगी।

मंगल टरबाइन की इतनी उपयोगिता के बावजूद इसका उपयोग उतनी तेज़ी से नहीं बढ़ा जितनी उम्मीद थी। इसका मुख्य कारण यह था कि मंगल सिंह को तरह-तरह की कठिनाइयों में उलझा दिया गया। उनका आर्थिक संकट बढ़ता गया; यहां तक कि उनके खेत नीलाम कर दिए गए। ऐसी स्थिति क्यों उत्पन्न हुई? आरोप-प्रत्यारोपों के दौर में भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्राालय ने इस पूरे मामले की विस्तार से जांच करवाई जिसकी रिपोर्ट अब उपलब्ध है। यह सूचना के अधिकार के अन्तर्गत प्राप्त की गई है।

इस रिपोर्ट को एक इंजीनियरिंग विशेषज्ञ के सहयोग से राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान के एक पूर्व निदेशक डॉ. बी.पी. मैथानी ने लिखा है। इस रिपोर्ट की विशेषता यह है कि मंगल सिंह प्रकरण के बारे में सही स्थिति प्रस्तुत करने के साथ उसने यह व्यापक सवाल भी उठाया है कि ग्रामीण वैज्ञानिकों के लिए सरकार के साथ या किसी भी बड़े संस्थागत ढांचे व नौकरशाहों के साथ काम करने में किस तरह की कठिनाइयां सामने आ सकती हैं। जांच रिपोर्ट में इन समस्याओं के समाधान पर भी चर्चा की गई है।

जहां तक मंगल सिंह से जुड़े मामले हैं तो इस बारे में जांच रिपोर्ट ने स्पष्ट बताया है कि वे एक बेहद प्रतिभाशाली, निष्ठावान व जुझारु व्यक्ति हैं। उन्होंने अपनी सब ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह से निभाने का पूरा प्रयास किया, बहुत मेहनत की। इसके बावजूद सरकारी परियोजनाओं को चलाने में कुछ ऐसी कमियां थीं जिन्हें वे अपने बल पर दूर नहीं कर सकते थे। कभी बजट कम दिया जाता था तो कभी पैसे समय पर रिलीज़ नहीं होते थे। कभी स्थानीय प्रभावशाली तत्त्वों के विरोध के कारण उनका कार्य अवरुद्ध हो जाता था। इन विभिन्न वास्तविक समस्याओं पर ध्यान दिए बिना कुछ अधिकारी विशेष तौर पर उन्हें आरोपों के घेरे में ले आते थे।

एक गांववासी होने के नाते मंगल सिंह को परियोजनाओं की रिपोर्ट बनाने व अकाउंटिंग की औपचारिकताओं का पता नहीं था। वे तो बस अपने वैज्ञानिक कार्य को निष्ठापूर्वक आगे बढ़ाना चाहते थे। मगर कुछ औपचारिकताओं को पूरा न कर पाने को ही मुख्य मुद्दा बनाकर मंगल सिंह को दंडित किया गया। होना तो यह चाहिए था कि अधिकारी व मूल्यांकनकर्त्ता स्वयं इन कमियों को सुधार कर मंगल सिंह की मदद करते। पर इन मूल्यांकनकर्ताओं ने औपचारिकताओं

में कुछ कमी रह जाने के आधार पर ही कड़ी कार्यवाही के निर्णय ले लिए व इस कारण अनेक संभावनाओं से भरा बेहद उपयोगी कार्य ठप हो गया।

जांच रिपोर्ट में मंगल सिंह के साथ पूरा न्याय करते हुए उनकी क्षतिपूर्त्ति करने व मंगल टरबाइन के कार्य को तेज़ी से आगे बढ़ाने की सिफारिश की गई है। साथ ही इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भविष्य में ग्रामीण वैज्ञानिकों को सहायता देने के साथ उन्हें औपचारिक रिपोर्ट तैयार करने, अकाउंट्स ठीक से रखने जैसी सहायता भी उपलब्ध करवाई जानी चाहिए ताकि वे सरकारी कामकाज की तमाम औपचारिकताओं को आसानी से पूरा कर सकें। मूल बात यह है कि वे अपना ध्यान अपने वैज्ञानिक व तकनीकी कार्य पर केंद्रित कर सकें और उसके लिए ज़रूरी प्रोत्साहन उन्हें मिलता रहे। ***(स्रोत फीचर्स)***